जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ वर्ष ५२ वे ❖ अंक १० वा ❖ जून २०२१ ❖ वीर संवत २५४७ ❖ विक्रम संवत २०७७

या अंकात

	पान नं.
● अंतिम महागाथा : २८ : दासता से मुक्ति - नारी का सम्मान	१३
● समूह में जीने की कला : समाचारी	२१
● धर्म के कॉलम में सिर्फ ''जैन'' लिखें	२९
● हास्य जागृति	३०
● सुखी जीवन की चाबियाँ - पंद्रह सद्गुण उपासना १२. सज्जन - प्रशंसा	३१
● एकादश पापस्थानक : द्वेष	४५
● प्रवचन मोती	४८
● रोग का प्रारम्भ स्वयं की असजगता से	४९
● सफल होना है तो : साधना की सिध्दी के सुझाव	५३
● महावीर की अहिंसा का वैश्विक स्वरुप	५४
● जेएटीएफ, पुणे नवीन हॉस्टेल - उद्घाटन	५७
● सिध्दी फाउंडेशन, पुणे	५७
● जीव प्रभा चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे	५८
● इंदूमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्ट, पुणे	५८
● नामको कोविड सेंटर, नाशिक	५९
● जय आनंद ग्रुप, पुणे	५९
● आर. के. लुंकड कोविड सेंटर, उद्घाटन	६०
● जैन सोशल ग्रुप पुणे आनंद	६०
● श्री. संतोषजी जैन, संतोष इनव्हेस्टमेंट - पुणे	६१
● साधु-साध्वी कोवीड लसीकरण, पुणे	६२

● रांका ज्वेलर्स, पुणे ६२
● सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युट, पुणे
डॉ. विजय भटकर – पुरस्कार ६३
डॉ. पी. डी. पाटील – पुरस्कार ६३
● श्री. अशोकजी चोरडिया –
सोलिटेयर ग्रुप, पुणे – विविध मदत ६५
● जुआँ से होता है सर्व विनाश ६८
● अंध विश्वास ६९
● वर्धमान एज्युकेशन ॲण्ड रिसर्च
इन्स्टिट्युट, पुणे ७१
● श्री शांतीनाथ सेवा संस्थान, संगमनेर ७१
● विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

● www.jainjagruti.in
● www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

● वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.

● आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. ● 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

समूह में जीने की कला : समाचारी

लेखक : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

बंधुओं ! तीर्थंकर भगवान् महावीर की अंतिम आदेय अनमोल वाणी उसी तरह सदा याद रखने योग्य है, जिस तरह जीवन भर दी गई शिक्षा को कदाचित पुत्र याद रख सके अथवा नहीं रख सके, परन्तु अंतिम समय में जो भोलावण, जो सीख, जो शिक्षा दी जाती है, उसको पुत्र जिन्दगी भर याद रखता है, उसको भूल नहीं सकता । उसी उत्तराध्ययन सूत्र की वाणी कहती है –

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्ख–विमोक्खणिं।
जं चरित्ता णं णिग्गंथा, तिण्णा संसारसागरं ।।

मैं उत्तराध्ययनसूत्र की इस गाथा के आधार पर आपको आचार की, उस पध्दति के बारे में बताना चाहता हूँ जो सारे दुखों का अंत करने वाली है । भले ही वह पध्दति निर्ग्रंथों को निर्देशित करके कही गयी हो। परन्तु गृहस्थ जीवन पर भी लागू होती है । तीर्थंकर भगवान् महावीर ने गौतम स्वामी को निर्देशित कर उपदेश दिये, गौतम बुध्द ने आनन्द को निर्देशित कर उपदेश दिये । भगवान महावीर ने मात्र गौतम स्वामी के लिए, गौतम बुध्द ने मात्र आनन्द के लिए ही नहीं कहा, अपितु सभी के लिए कहा । उत्तराध्ययनसूत्र के अनुसार समस्त दुखों का अंत करने वाली है समाचारी । आचार्य भगवन्त फरमाया करते थे –

सबसे बढ़कर प्रेम है, उससे उपर नेम ।
जा घर प्रेम न नेम है, वा घर कुशल न क्षेम ।।

प्रेम इतना विस्तार कर गया है अपने लिए, परायों के लिए, छोटों के लिए, मोटों के लिए, एकेन्द्रिय के लिए, पंचेन्द्रिय के लिए, सबके प्रति प्रेम हो । जिस घर में प्रेम है वहाँ कोई नियम नहीं है वह कल्पातीत है । समूह में इतना प्रेम होता है कि छोटा बड़ों का काम करता है, बड़ा छोटे का काम करता है । कोई ईर्ष्या नहीं, कोई द्वेष नहीं, वहाँ कोई नियम की आवश्यकता नहीं । एवन्ता कुमारी गौतमस्वामी को उनकी अंगुली पकड़ कर अपने घर गोचरी के लिए लाया है । वह उदारता से लाया है, माँ प्रसन्न हो रही है । पुराने समय में जयपुर का एक भी व्यक्ति संतों से क्षेत्र को फरसने के लिए विनति कर देता था तो संघ उसको स्वीकार कर लेता था । विनति करने के लिए संघ का अध्यक्ष, संघ का मंत्री गया अथवा नहीं गया, बडा व्यक्ति गया अथवा नहीं गया । एक भी व्यक्ति भावपूर्ण विनति कर देता तो संघ स्वीकार कर लेता । जिस घर में इतना प्रेम होता है, उस घर में नियम का पालन स्वत: होता रहता है । बड़ा आदमी राजा होते हुए भी बर्तन मांज रहा है, क्योंकि प्रेम है, जिस घर में अन्तरंगता है, सहिष्णुता है, एक दूसरे के लिए पूरक मानकर चला जा रहा है वहाँ अलग से नियम की जरुरत नहीं है ।

जहाँ प्रेम नहीं अपनत्व नहीं उस घर के लिए उस समूह के लिए नियम की, समाचारी की जरुरत होती है। साधु–जीवन की जो दस समाचारी है, वे गृहस्थ जीवन को भी सुन्दर बनाती हैं । उन दस समाचारियों के आधार पर गृहस्थ जीवन के नियमों की बात कर रहा हूँ।

पहली समाचारी है – 'आवस्सिया' ।

अर्थात् घर से बाहर जाए तो आवश्यक कार्य से जाने की अनुमति लेकर जाए अथवा सूचना देकर जाए । जो लोग बुरा करने वाले हैं, जिन लोगों में कमियाँ हैं, जो सही मार्ग पर नहीं चल रहे हैं वे व्यक्ति 'आवस्सिया' कह ही नहीं सकते । जुआ खेलने वाला, व्यभिचार सेवन करने वाला, प्रतिष्ठा के प्रतिकूल कार्य करने वाला, कभी यह कह कर नहीं जाएगा कि मैं अमुक जगह जा रहा हूँ । आवस्सिया समाचारी का पालन वो ही करेगा, जिसके जीवन में सच्चाई है, धर्म

है, नैतिकता है । जहाँ बुराई है वहाँ समाचारी नहीं और जहाँ समाचारी नहीं है वहाँ दुखों का अंत नहीं है । समाचारी नहीं वहाँ साख नहीं है । मारवाड़ी भाषा में कहूँ तो – लाख जावे साख रहे । साख रहेगी तो लाख मिल जाएगा । साख नहीं है तो सब कुछ राख हो जाता है । मैंने आचार्य भगवन्त के चरणों में रहते सुना कि अमुक सज्जन चीफ जस्टिस होते हुए भी बिना कहे घर से बाहर नहीं जाते थे । बड़ा भाई सामान्य स्थिति वाला था, छोटा भाई जस्टिस होते हुए भी बड़े भाई के पैर के हाथ लगाये बिना नहीं जाता था । समाचारी कहती है कि गुरु छोटा है चेला बड़ा है अवस्था की दृष्टि से, पर गुरु बाहर जाने पर चेले से 'आवस्सिया' कहकर जावे । किसी का पिता सामान्य स्थिति वाला हो और बेटा जज बन जावे, मंत्री बन जावे, मुख्यमंत्री बन जावे, फिर भी घर का नियम हो कि बिना कहे बाहर नहीं जाना । एक ही समाचारी कहूँ जिसमें सारी समाचारी समावेश की हुई है । जिसके मन में कुछ और है और बाहर में कुछ और है वह 'आवस्सिया' नहीं कर सकता । वह कदाचित् कह कर जाएगा तो नाम किसी जगह का लेगा और जाएगा किसी अन्य जगह ।

दूसरी समाचारी 'निसीहिया' है ।

इसके द्वारा काम करके लौटने की सूचना दी जाती है । साधु जिस काम के लिए गया और उस काम को करके आने पर गुरु चरणों में निवेदन करे कि अमुक काम करके आ गया हूँ । हो सकता है साधक जीवन में भिक्षाचरी, औषधि के लिए गया, ५ मिनट का काम है ५ घंटे लग जावे, क्योंकि सूझती नहीं मिले, वर्षा आ जावे, देने वाला कहीं बाहर गया हो ऐसे घरों से देर से आ सकता है, गुरु को तब सोच करने की जरुरत नहीं । जो कहता कुछ है और करता कुछ है तब पूछना पड़ेगा – कहाँ गया ? किससे लाया ? सारे पारिवारिक दुखों को मिटाने वाली समाचारी है यह । इसका पालन करने वाला बुराई कर ही नहीं सकता । ''आवस्सिया निसीहिया'' कहने वाला बुराई नहीं कर सकता । कदाचित् बोध न होने से कोई आदत बुरी पड़ गई है, नहीं छूट रही है, किन्तु घर से जाने एवं आने की पूरी सूचना देने वाले को गलत कार्य करने पर मन में ग्लानी होगी और धीरे-धीरे बुराई दूर हो जाएगी । बुराई नहीं टिकेगी, अगर वह वापिस आकर निस्सही कहता है तो। कहाँ पर गया, १४ पूर्वधारी गौतम भी प्रभु को सूचना देते थे । देर हुई तो बिना पूछे भी सारी बात कहते थे, आज यह घटना हो गई । घर में भी बाहर जाने वाला सदस्य लौटकर आने पर बताए कि यह काम करके आया हूँ । कहने वाला है तो समाधान हो जाएगा । इसलिए भगवान ने शब्द बताया 'सव्वदुक्खविमोक्खणिं ।' सारी बुराइयों को खत्म करने वाली, सारे दोषों को समाप्त करने वाली है समाचारी । सामंजस्य है, तो बड़े और छोटे का भेद नहीं है ।

तीसरी समाचारी है 'आपुच्छणा' ।

किसी भी कार्य प्रवृत्ति करने से पहले गुरु से पूछना । एक भाई ने सुनया म.सा. छोरे ने सगाई कर ली, शादी भी कर ली, म्हाने मालूम ही नहीं । धन्धा किया चार लाख का, घाटा लगा, पता नहीं ऐसा क्यों हुआ ? वर्तमान में परिवार में बड़ों से बिना पूछे करने की आदत पड़ गई है। शास्त्र कह रहा है श्वासोच्छ्वास और पलक झपकने के अलावा कोई काम गुरु से बिना पूछे नहीं करे । पूछकर कार्य करने से अहंकार, दीनता, हीनता मिटती है । काम सिध्द हो जाने पर बहुत सरलता से कहे, विनम्रता से कहे । काम नहीं होवे तो विनम्रता से कहे अमुक कारण से यह काम नहीं हुआ, इसमें मेरा कोई दोष नहीं है । आपने जैसा कहा, वैसा मैंने कर दिया ।

साधक आपुच्छणा समाचारी में गुरु से पूछे – इच्छं णिओइउं भंते ! वेयावच्चे व सज्झाए । प्रातः अपना काम प्रारंभ करने से पहले शिष्य गुरु से पूछे – ''भगवन् ! मुझे आज क्या करना है ?'' साधक के लिए दो ही काम बताये गये हैं – १. स्वाध्याय और २. सेवा । जिस काम में गुरु शिष्य को नियुक्त करे उसी

काम में लग जावे । शिष्य को अठाई करनी है, गुरु कह देवे अभी अवसर नहीं । तब मन में यह विचार नहीं लावे कि अमुक शिष्य तो दुबला पतला होते हुए भी उसे अठाई की स्वीकृति और में जब भी पूछूँ तो मुझे कह देते हैं अभी अवसर नहीं है । मतलब क्या हुआ ? पूछने की पध्दति समाप्त हो जाएगी । अगर हल्के रहना चाहते हो, स्वस्थ रहना चाहते हो, चिन्तन मुक्त रहना चाहते हो तो पूछ कर कार्य करो । घर में भी यही नियम लागू होता है । परिवार के मुखिया से पूछकर विशेष कार्यों में प्रवृत्ति करे । धन्धे की बात हो या भोजन बनाने की, पूछकर करने पर पिता या सासू से व्यवहार सुन्दर रह सकेगा ।

चौथी समाचारी है – 'प्रतिपृच्छना' ।

भिक्षा के लिए जाने वाले शिष्य को कोई दूसरा शिष्य यह कह देवे कि मेरे लिए अमुक कपड़ा ले आना, मेरे लिए अमुक दवाई ले आना । जिस काम के लिए शिष्य जा रहा है यदि अन्य कोई शिष्य औषधि लाने, कपड़ा लाने का काम बतावे तो शिष्य पुन: गुरु के पास जाकर बतावे कि मुझे अमुक मुनि ने अमुक काम बताया है, जाने से पहले पुन: गुरु से पूछे । पुन: पूछने का अभिप्राय है कदाचित् वह कार्य किसी दूसरे मुनि ने कर दिया हो । अन्य किसी को उस कार्य के लिए आज्ञा प्रदान की गई हो । गृहस्थ जीवन में भी मुखिया ने कार्य का विभाजन सोच रखा हो या दिमाग में कोई अन्य बात हो तो परस्पर विचार–विमर्श से समाधान मिल जाता है ।

पांचवी समाचारी है 'छंदणा' ।

अपने लिए मिली हुई वस्तु के उपयोग हेतु दूसरे को निमंत्रित करना । यह समाचारी – ईर्ष्या, द्वेष मिटाने वाली है । गुरु अपने किसी ज्ञानी शिष्य को प्रसन्न होकर कुछ दे, जो दूसरों को न दी गई हो, ऐसी वस्तु के लिए वह दूसरों को निमंत्रित करें । एक घर में चार बहुएँ थी । एक लखपित घर की, दुसरी गुणवान, तीसरी रुपवान स्थिति की और चौथी सामान्य । सासूजी किसी बहू पर प्रसन्न होकर भेंट देती है तो जिस बहू को अमुल भेंट मिली तो अन्य किसी देरानी/जेठानी से पूछे कि मेरे पास तो यह जीज़ है, आपको चाहिए तो आप ले लो, तो देरानी/जेठानी के झगड़े नहीं होंगे । छोटे–बड़े का भेद कि यह अमीर घर की, मैं गरीब घर से हूँ, इसके लिए लापसी और मेरे लिए थूली – ऐसा विचार इस समाचारी से समाप्त हो जाएगा । चन्दना अपने हक में अपने लिए मिली हुई वस्तु दूसरों को देती है । समूह का जीवन चाहे श्रमण–श्रमणी का हो, श्रावक–श्राविका का हो अथवा वह जीवन किसी सद्गृहस्थ का हो । जो गृहस्थ घर में नियम के साथ रहता है, उस घर में आत्महत्या करने की, घर छोड़कर चले जाने की घटना कभी नहीं होगी। कब नहीं होती ये घटनाएँ ? जब बड़ा छोटों के प्रति प्रेम भाव, स्नेह भाव करता हो और छोटा बड़ों को सम्मान देता हो ।

छठी समाचारी है 'इच्छाकार' ।

कोई ज्ञान सीखना चाहता है तो विनम्रता के साथ कहे कि आपको साता हो, आपको अनुकूलता हो, आपके पास समय हो तो अमुक ज्ञान सीखना है । सामने वाला अवश्य सिखाने का भाव रखेगा । यदि कोई पुत्र विनम्रता के साथ अपने पिता से बात कहे तो कोई भी पिता बेटे की बात अवश्य सुनेगा । आपको अनुकूलता है, आपको समय है, आपको असाता तो नहीं होगी, मैं यह करना चाहता हूँ । इस प्रकार का भाव परिवार के व्यवहार में आ जाए तो कितना आनन्द होगा।

सातवीं समाचारी 'मिथ्याकार' है ।

इसका तात्पर्य है की हुई भूल के लिए खेद प्रकट करना, पश्चात्ताप करना । निर्दोष मात्र केवली भगवान होते हैं, छदमस्थ में दोष होते ही हैं । जाने–अनजाने में, सोचे समझे बिना कोई न कोई भूल हो ही जाती है । चलने वाले को धूल लगती है, करने वालों से भूल होती है । जहाँ सर्वज्ञता नहीं है, वहाँ भूल होती ही है । अत: भूल को, गलती को छुपाओं मत, झूठ मत बोलो, कारण कि एक छूठ को छिपाने के लिए १००

बार झूठ बोलना पड़ता है। भूल करेगा तो एक बुराई सौ बुराई को लायेगी। छदमस्थ कहते उसे ही हैं जो उपयोग नहीं रखने के कारण भूल कर बैठते हैं। अत: उसका खेद प्रकट करके समाधान करे। समाधान से बड़ी-बड़ी भूल भी धूल के साथ धुल जाती है। खेद के साथ निवेदन कर दे, किन्तु आज छोटी-छोटी भूल को छिपा कर बढ़ा रहे हैं। कमाने वाला पचास बार कमाता है, एक बार नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। चलने वाला ५० बार चलता है, कभी एक बार ठोकर भी खा सकता है। रोज खाने वाले को कभी वमन हो सकता है, दस्त भी हो सकता है, पर कारण मिटा दिया जाए तो खाना छोडने की जरुरत नहीं। खेद प्रकट कर लिया जाए, पश्चात्ताप कर लिया जाए, भूल स्वीकार कर ली जाए तो कार्य को छोड़ने की जरुरत नहीं है। जिसे शास्त्र की भाषा में 'मिच्छामि दुक्कडं' कहते हैं, वही मिथ्याकार है। मेरे से गलती हो गई है, मैं पश्चात्ताप करता हूँ। एक बार पश्चात्ताप कर लेने से फिर से वह भूल नहीं होगी।

आठवीं समाचारी है 'तहक्कार' –

गुरुदेव के वचनों को 'तहत्ति' कह कर स्वीकार करे। अनुकूल प्रतिकूल सभी वचनों को हर्षित होकर आचरण में लाए। अनुकूल माने और प्रतिकूल नहीं माने तो कभी करणीय कार्य की भी अनुज्ञा नहीं मिलती है, लेकिन जो बड़ों की आज्ञा को स्वीकार कर चलते हैं उन्हें सहर्ष आज्ञा मिलेगी। तपस्वी को तपस्या की, ज्ञान वाले को ज्ञान की, सेवा करने वाले को सेवा करने की आज्ञा मिलेगी। शास्त्र की भाषा में यदि गुरु यह कह दे कि कौआ सफेद होता है तो गुरुदेव ने कहा तो सही होगा। समझ में नहीं आने पर बाद में गुरु से पूछ सकता है। एक बार तो स्वीकार कर ले। सेना की परेड में यदि सैनिक को सेनाध्यक्ष निर्देश कर दे कि खाई में, कीचड़ में सोना है, तो देश का रक्षण करने वाला सैनिक वह कर सकता है। गुरुदेव तो आत्मा से परमात्मा बनने में बाधक दोष दूर करने वाले हैं। अत: उनकी आज्ञा स्वीकार कर चलना चाहिए। इस प्रकार परिवार में परिवार के मुखिया का आदर होना चाहिए।

'अभ्युत्थान' नौंवी समाचारी है।

बड़ों के आने पर हाथ जोड़, सिर झुकाकर आदर सत्कार करे, सन्मान करे, विनयभक्ति करे। इस नियम से बड़ों के प्रति कभी गलत व्यवहार नहीं होगा।

दसवीं समाचारी 'उवसंपया' (उपसम्पदा) है –

यह जीवन विकास का आगम सूत्र है। अगर अपने जीवन को उपर उठाना चाहते हो तो बड़ों के पास बैठें। बड़ों के पास बैठने से मस्करी नहीं होगी, मज़ाक नहीं होगी, जीवन का विकास करेंगे। अच्छी संगति करें। बड़ों के पास, सज्जनों के पास बैठें। बड़ों के पास बैठने से पहली बात तो बुराई आयेगी ही नहीं और बुराई होगी भी तो बड़ों के संसर्ग से दूर हो जाएगी। अच्छा से अच्छा व्यक्ति है, लेकिन कुसंगति में बैठता है, उसमें बुराई नहीं भी है तो बुराई आ जाएगी। कोयले की दुकान पर बैठे हो, तो कालापन आ ही जायेगा और गंधी की दुकान पर बैठेंगे तो एक पैसा भी खर्च नहीं किया तब भी वहाँ बैठने से अच्छी गंध पायेगा, जीवन का विकास कर लेगा। श्रमण या श्रमणी श्रावक या श्राविका जो भी समूह में रहने वाला सद्गृहस्थ है, जिन घरों में इस समाचारी का पालन होता है ऐसे नियम के साथ घर चलता है वह निश्चित ही तीर्थंकर भगवान की भाषा में सभी दुखों का अंत कर लेता है, सभी सम्पदाओं का स्वामी होता है। प्रीति से सबका सर्वमान्य बनता है। कदाचित् सभी नियमों का पालन हो सके तो एक ही बात याद रखना हमेशा अपने से बड़ों के पास बैठना। इस एक सूत्र को लेकर चलने से उस परिवार में, समूह में, समाज में शान्ति, समाधि होगी वह सामान्य से सर्वमान्य बन जाएगा।

ज्ञान के इस आचरण की सम्पदा को अपने जीवन में ढाल कर दूसरों को सिखाकर हर व्यक्ति के जीवन में आचरण की बात रखेंगे तो सुनना सार्थक होगा। ''दीप से दीप जले'' की कहावत के अनुसार एक ज्ञानी पूरे गाँव को ज्ञानी बनाने वाला बन सकता है, ऐसे आचरण को जीवन में उतारेंगे तो शान्ति समाधि को प्राप्त करेंगे।•

कव्हर तपशील - जून २०२१

- **साधु–साध्वी लसीकरण, पुणे**
  १८ मे रोजी प्रभाग क्रमांक २८ मध्ये डी.एस.के. सोसायटी, आदिनाथ सोसायटी, महावीर प्रतिष्ठान व इतर ठीकठिकाणी असणाऱ्या साधु–संतांचे लसीकरण करण्यात आले. या प्रसंगी नगरसेवक प्रवीणजी चोरबेले, मा. नगरसेविका मनीषा प्रवीणजी चोरबेले, नगरेसेविका शिळीमकर, नगरसेवक बाळा ओसवाल, माजी नगरसेवक अभयजी छाजेड, अविनाशजी शिळीमकर, अचलजी जैन, जीतो पुणेचे अध्यक्ष ओमप्रकाशजी रांका, विजयजी भंडारी, आदेशजी खिंवसरा व युवक महासंघाचे सर्व पदाधिकारी उपस्थित होते.
- **श्री. अशोकजी चोरडिया – सोलिटेयर ग्रुप**
  पुणे येथील अशोकजी धनराजजी चोरडिया - सोलिटेयर ग्रुप व अर्जुन चॅरिटेबल ट्रस्ट तर्फे फरासखाना पोलिस स्टेशन जवळील गरजू महिलांना १० किलो वजनाचे किरणा सामानाचे ९०० कीटचे वाटप करण्यात आले. सहआयुक्त पुणे पोलिस श्री. रविंद्र शिसवे व उपआयुक्त पुणे पोलिस प्रियांका नारनवरे व श्री. अशोकजी चोरडिया यांच्या हस्ते वाटप करण्यात आले.
- **जितो पुणे – श्री. प्रफुल्लजी कोठारी सन्मान**
  जितो पुणे तर्फे पुण्यात ३ कोवीड सेंटर, प्लाझमा दानासाठी पुढाकार, कोरोना पेशंटना मदत करण्यासाठी टास्क फोर्स, विविध ठिकाणी धान्य कीट, इ. वाटप असे विविध समाजसेवेच्या योजना करण्यात आल्या. महावीर प्रतिष्ठान येथे प्लाझ्मा डोनेशन शिबिराचे आयोजन करण्यात आले. यावेळी पुणे येथील उद्योजक व डायग्नोपिनचे संचालक श्री. प्रफुल्लजी कोठारी यांचा जितो पुणे तर्फे विशेष सत्कार करण्यात आला. जितो तर्फे आलेल्या पेशंटला डायग्नोपिन सेंटर मध्ये अल्प सवलतीच्या दरात कोवीड अँटीबॉडी टेस्ट करुन देण्यात येत आहे. श्री. प्रफुल्लजी कोठारी यांचा सन्मान जितो ॲपेक्सचे उपाध्यक्ष श्री. विजयजी भंडारी, जितो पुणेचे अध्यक्ष श्री. ओमप्रकाशजी रांका, मुख्य सचिव पंकजजी कर्नावट, सिध्दी फाउंडेशनचे श्री. मनोजजी छाजेड, श्री. ललीतजी शिंगवी इ. मान्यवरांच्या हस्ते करण्यात आला.
- **सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्युट, पुणे**
  डॉ. श्री. विजय भटकर – सन्मान
  सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटच्या वतीने 'आत्मनिर्भर भारत राष्ट्रीय पुरस्कार - २०२१' विज्ञान आणि माहिती तंत्रज्ञान क्षेत्रातील अतुलनीय योगदाना बद्दल पद्मभूषण डॉ. विजय भटकर यांना प्रदान करण्यात आला. या कार्यक्रमा वेळी सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजय चोरडिया, प्रा. डॉ. शैलेश कासंडे, प्रा. सुनील धाडीवाल, प्रा. अक्षित कुशल आदि उपस्थित होते.
- **डॉ. पी. डी. पाटील – सन्मान**
  सूर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूट तर्फे सूर्यदत्ता एज्यु–सोशियो कनेक्ट इनिशिएटिव्ह अंतर्गत उल्लेखनीय वैद्यकीय व सामाजिक सेवेबद्दल डॉ. पी. डी. पाटील यांना 'सूर्यदत्ता सेवा–रत्न राष्ट्रीय पुरस्कार–२०२१' पिंपरी–चिंचवडचे पोलीस आयुक्त कृष्ण प्रकाश यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला. सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजय चोरडिया, उपाध्यक्षा व सचिव सुषमा चोरडिया,सचिन इटकर, प्रा. सुनील धाडीवाल, प्रा. मिलीना राजे आदी उपस्थित होते.
- **रांका ज्वेलर्स, पुणे**
  पुण्यातील प्रसिध्द उद्योगपती व रांका ज्वेलर्सचे प्रमुख श्री ओमप्रकाशजी रांका यांनी मार्केट यार्ड, इंदिरानगर, सिहंगड रोड परिसरातील गरजुंना किराणा कीटचे वाटप मार्केटयार्ड पोलिस स्टेशनच्या वरिष्ठ पोलिस निरीक्षक अनघा

देशपांडे यांच्या हस्ते करण्यात आले. तसेच गरजू व हुषार विद्यार्थ्यांना श्री. ओमप्रकाशजी रांका व वस्तुपाल रांका यांच्या हस्ते लॅपटॉप देण्यात आले.

❖ **नामको कोविड सेंटर, नाशिक**

नाशिक - नामको चॅरिटेबल ट्रस्ट संचालित नामको हॉस्पिटलच्या वतीने उभारण्यात आलेल्या आरएमडी कोविड सेंटरचा पालकमंत्री तथा अन्न व नागरी पुरवठा मंत्री श्री. छगनजी भुजबळ यांच्या हस्ते दिमाखात शुभारंभ झाला.

सेंटरच्या उद्घाटन प्रसंगी आमदार दिलीप बनकर, वसंत गिते, नामको बँकेचे अध्यक्ष विजय साने, उपाध्यक्ष हरीश लोढा, संचालक हेमंत धात्रक, राजाभाऊ डोखळे, रंजन ठाकरे यांच्यासह नामको ट्रस्टचे अध्यक्ष सोहनलालजी भंडारी व सेक्रेटरी शशिकांतजी पारख, विश्वस्त जयप्रकाशजी जातेगावकर, आदी मान्यवर उपस्थित होते.

❖ **श्री. संतोषजी जैन, संतोष इनव्हेस्टमेंट, पुणे**

Trump Brand ज्यांनी भारतात जोडलेला आहे. अशा नामंकित TRIBECA ग्रुपचा हा THE ARK - VOYAGE To The Stars प्रकल्प NIBM, PUNE येथे साकार होत आहे. पुण्यातील नामांकित उद्योजक श्री. संतोष जैन यांनी हा प्रकल्प विक्रीसाठी घेतला आहे. यापूर्वी देखील SANTOSH INVESTMENTS यांनी अनेक नामांकित बांधकाम व्यावसायिकां सोबत रियल इस्टेट क्षेत्रामध्ये चांगले काम केले आहे.

❖ **जेएफटी नवीन हॉस्टेल, पुणे**

अक्षय तृतीयेच्या शुभ मुहूर्तावर जितो-जेएटीएफ (जितो ॲडमिनिस्ट्रेटिव्ह ट्रेनिंग फाउंडेशन) च्या नव्या हॉस्टेलचे उद्घाटन करण्यात आले. जितो ROM JATF चे चेअरमन इंदरजी जैन, कव्हेनर राहुलजी सांकला आणि को-कव्हेनर संजयजी डागा यांच्या हस्ते कलश पूजन करण्यात आले.

यावेळी जितोचे राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री. विजयजी भंडारी, रेस्ट ऑफ महाराष्ट्र अध्यक्ष कांतीलालजी ओसवाल, रेस्ट ऑफ महाराष्ट्र माजी अध्यक्ष राजेशजी सांकला, जितो पुणेचे अध्यक्ष ओमप्रकाशजी रांका, चीफ सेक्रेटरी पंकजजी कर्नावट, सी.ए. सुहासजी बोरा, जेएटीएफ पुणेच्या सेंट्रल इनजार्च नलिनीजी राठोड उपस्थित होते.

❖ **आर के. लुंकड कोविड सेंटर**

पुणे : प्रसिध्द बांधकाम व्यावसायिक श्री. रमणलालजी लुंकड परिवाराच्या वतीने व पिंपरी-चिंचवड महापालिकेच्या परवानगीने तसेच सकल जैन संघाच्या अंतर्गत कासारवाडी जवळील कलासागर हॉटेल मध्ये दि. १ मे रोजी आर. के. लुंकड कोविड केअर सेंटरचे उद्घाटन डीसीपी मंचकजी ईप्पर व कोविड सेंटरचे आयोजक श्री. रमणलालजी लुंकड यांच्या हस्ते करण्यात आले.

❖ **स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्ट, पुणे**

स्व. इंदुमती बन्सीलाल संचेती ट्रस्टने राजाराम ब्रीज येथील वृध्दाश्रमात असलेले ९० पेक्षा जास्त वृध्दांना आंबे, मास्क, सायनिटायझरचे वाटप केले. यावेळी ट्रस्टचे अध्यक्ष श्री. अभयजी संचेती, काँग्रेसचे अभयजी छाजेड, विजयजी शिंगवी, ॲड. गौरी भटेवरा, रिद्धी संचेती, सुभाषजी पगारिया, सुरेशजी वानगोता, महेशजी गायकवाड उपस्थित होते.

❖ **जीवप्रभा चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे**

जीवप्रभा चॅरिटेबल ट्रस्ट औंध, पुणे तर्फे ससून हॉस्पिटल व चर्तुश्रृंगी पोलिस स्टेशनमध्ये कोवीड पेशंटला उपयोगी अशा विविध वस्तु भेट दिल्या. या प्रसंगी वरिष्ठ पोलिस निरिक्षक राजकुमार वाघचवरे, ट्रस्टचे विश्वस्त सुचेता शहा, श्री. मनोज गांधी, श्री. चकोर गांधी, सौ. अनुराधा व श्री. सुरेंद्र गांधी उपस्थित होते. ●

धर्म के कॉलम में सिर्फ "जैन" लिखे

भारत सरकार जनगणना २०२१ - डिजिटल जनगणना

जैन भाई-बहनों जागो, जागृत हो जाओ, जैन बंधु जागृती अभियान।

भारत सरकार हर १० वर्ष के बाद राष्ट्रीय जनगणना करती है। सन् २०११ में जनगणना हुई थी। अब २०२१ में होगी। इस वर्ष जनगणना पेपरलेस होने के कारण टॅबलेट पर जानकारी लिखनी है। जनगणना अब जल्द ही शुरु होगी।

२०११ के जनगणना में जैन धर्मियों की जनगणना सिर्फ ४५ लाख दिखाई गई है। परंतु वास्तव में जैन धर्मियों की लोकसंख्या इससे कई गुना अधिक ही है। गुरुदेव भगवंत और जानकारों के मतानुसार जैन धर्मियों की संख्या २ से ३ कोटी होगी।

जैन धर्मियों की लोकसंख्या जनगणना में कम आने के कारण निम्नलिखित हो सकते हैं।

१) जनगणना प्रतिनिधी जब अपने घर आता है उस समय अधिकांश लोग धर्म के कॉलम के आगे श्वेतांबर जैन, दिगंबर जैन, स्थानकवासी जैन, हिंदु जैन, जैन हिंदू, ओसवाल जैन, पोरवाल जैन इ. लिखते हैं। वास्तव में ऐसा कुछ भी न लिखे बल्कि उस कॉलम के आगे मात्र 'जैन' ही लिखें। जैन धर्म एक स्वतंत्र और अति प्राचीन धर्म है। जैन धर्म किसी भी धर्म की शाखा, उपशाखा नहीं है।

२) जनगणना प्रतिनिधी जब फॉर्म भरता है तब अपने मन से ही बिना पूछे ही धर्म के कॉलम में कोई भी धर्म लिख देता है। कईयों को ऐसा अनुभव आया है।

३) जनगणना अधिकारी जब फॉर्म भरने अपने घर पर आता है उस समय महिला अथवा बालक घर पर होते हैं। उन्हें धर्म के कॉलम में क्या लिखना है वह मालूम नहीं होता। अत: धर्म के कॉलम में कुछ भी लिख दिया जाता है।

फॉर्म अच्छी तरह देखभाल कर पढ़ने के बाद धर्म के कॉलम में सिर्फ 'जैन' लिखना है इसका जरुर ध्यान रखें।

जनगणना फॉर्म में मातृभाषा के कॉलम के साथ और कौनसी भाषा जानते हो ऐसा कॉलम होता है उसमें आप 'प्राकृत' भी लिखे। हमारे अधिकतर ग्रंथ प्राकृत भाषा में है। हम रोज प्रार्थना करते हैं उसमें से बहुत से श्लोक प्राकृत भाषा में हैं। अत: भाषा के कॉलम में प्राकृत का उल्लेख जरुर कीजिए। सरकारी कार्यालय में 'प्राकृत' भाषा का आस्तित्व टिकाए रखना है।

केंद्र सरकार और राज्य सरकार राष्ट्रीय जनगणना के आधारपर विविध योजना बनाते हैं। वैसे ही विविध राजकीय पक्ष भी इस जनगणना के आधार पर अपना नेता चुनते हैं और अनेक योजना को कार्यान्वित करते है। लोकशाही का तत्त्वज्ञान है - "जितनी जिनकी संस्था भारी, उतनी उनकी भागिदारी" अत: जैनों की सही जनसंख्या राष्ट्रीय जनगणना में आना अत्यंत आवश्यक और महत्त्वपूर्ण है।

जैन समाज के नेतागण, विविध संस्था, आचार्य भगवंत, साधु-साध्वीजी भी इस ओर विशेष ध्यान देकर लोगों में जागृती निर्माण करें। विशेष आग्रहपूर्वक लोगों में प्रचार करें कि धर्म के कॉलम में 'जैन' ही लिखें।

हमारा अस्तित्व हमें कायम स्वरुपी टिकाए रखना है। जैनों की संख्या कोट्यावधी होते हुए भी मात्र कुछ लाखों की गिनती जनगणना में दिखाई जा रही है। जनगणना फॉर्म में जैनों की संख्या केवल 'जैन' न लिखने के कारण कम होती जा रही है। कहीं ऐसा न हो कि जैन धर्म भारत सरकार राष्ट्रीय जनगणना में नामशेष हो जाए। अत: जागरुक रहिए। जनगणना यह हमारा अभियान संपूर्ण भारत भर करने का संकल्प करना है और अधिक से अधिक प्रचार प्रसार करना है। यह हर जैनी का परम कर्तव्य है। •